XX–3248–AB Seat No. _____

M. A. (Part – II) Examination

April / May – 2003

Hindi : Paper – VIII

१–विशेष साहित्यकार–कबीर

२–विशेष साहित्यकार–प्रेमचंद

Time : **3** Hours] [Total Marks : **100**

सूचना : सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं ।

१–विशेष साहित्यकार–कबीर

१ ''भारतीय धर्मसाधना में कबीर का योगदान'' – विषय पर लेख लिखिए ।

अथवा

१ 'सच्चे अर्थ में कबीर सम्प्रदायवादी नहीं बल्कि एक समन्वयवादी विचारक थे ।'–'कबीर' के आधार पर समीक्षा कीजिए ।

२ कबीर की काव्य कला पर अपने विचार प्रदर्शित कीजिए ।

अथवा

२ 'कबीरदास की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई थी' – इस कथन की सार्थकता सोदाहरण सिद्ध कीजिए ।

३ सिद्ध कीजिए कि कबीर की सर्वांगीण साहित्य साधना मानवता को केन्द्र में रखे हुए है ।

अथवा

३ 'कबीर सन्त बाद में हैं, समाज सुधारक पहले हैं' – उक्ति का समर्थन कीजिए ।

४ किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) कबीर की सहज साधना ।

(ख) कबीर काव्य में विरहानुभूति ।

(ग) कबीर की उलटबाँसिया ।

(घ) कबीर के राम ।

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(अ) संतन जात न पूछो निरगुनियाँ ।
साध ब्राह्मन साध छतरी, साधै जाती बनियाँ ।
साधन माँ छतीस कोम है, टेढी तोर पूछनियाँ ।
साधै नाउ साधै धोबी साधै जाती है बरियाँ ।

अथवा

(अ) अवधू माया तजी न जाई ।
गिरह तज के बस्तर बाँधा, बस्तर तज के फेरी ।
काम तजे ते क्रोध न जाई, क्रोध तजे ते लोभा ।
लोभ तजे अहँकार न जाई, मान बडाई शोभा ।

(आ) मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ।
हीरा पायो गांठ गठियायो बार बार वा को क्यों खोले ।
हलकी थी जब चढी तराजू पूरी भई तब क्यों तोले ।
सुरत कलारी भई मतवारी मदवा पी गई बिन तोले ।
हंसा पाये मानसरोवर ताल–तलैया क्यों डोले ।
तेरा साहब है घर माँही, बाहर नैना क्यों खोले ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो साहब मिलि गये तिल ओले ।

अथवा

(आ) तो को पीव मिलैंगे घूँघट के पट खोले रे ।
घर घर में वही साईं रमता कटुक वचन मत बोले रे ।
धन जोबन की गरब न कीजै झूठा पँचरँग चोल रे ।
सुन्न महल में दियना वार लै आसा सों मत डोल रे ।
जोग जुगत सो रंगमहल में पिय पाई अनमोल रे ।
कहै कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ।

२–विशेष साहित्यकार–प्रेमचंद

१ 'गोदान' में प्रेमचंद द्वारा उठाई गई मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डालिए । २०

अथवा

१ होरी–धनिया के दाम्पत्य सम्बन्ध का उद्‌घाटन कीजिए । २०

२ कहानी कला की दृष्टि से 'कफ़न' कहानी की समीक्षा कीजिए । २०

अथवा

२ 'हमें सुन्दरता की कसौटी बदलनी होगी'–इस कथन के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद की पठित कहानियों पर विचार करिए । २०

३ 'कुछ विचार' में प्रेमचंद की उपन्यास सम्बन्धी मान्यताओं का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । २०

अथवा

३ 'साहित्य का उद्देश्य' निबन्ध को ध्यान में रखते हुए प्रेमचंद की साहित्य–सम्बन्धी अवधारणा समझाइए । २०

४ हिन्दी कहानी में प्रेमचंद के मौलिक योगदान की चर्चा कीजिए । २०

अथवा

४ किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : २०

(क) 'गोदान' में मालती–मेहता का सम्बन्ध निरूपण ।

(ख) प्रेमचंद की कहानियों में दलित पात्र ।

(ग) 'कुछ विचार' में जीवन और साहित्य का सम्बन्ध ।

(घ) गोदान में खन्ना का व्यक्तित्व ।

५ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : २०

(क) जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएं मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं । कौन कहता है, जीवनसंग्राम में वह हारा है । यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं ? इन्हीं हारों में उसकी विजय है । उसके टूटे–फूटे अस्त्र उसकी विजय पताकाएं हैं । उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है ।

अथवा

(क) मुझे खेद है, हमारी बहनें पश्चिम का आदर्श ले रही है, जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है और स्वामिनी से गिरकर विलास की वस्तु बन गयी है । पश्चिम की स्त्री स्वच्छंद होना चाहती है, इसलिए कि वह अधिक से अधिक विलास कर सके । हमारी माताओं का आदर्श कभी विलास नहीं रहा । उन्होंने केवल सेवा के अधिकार से सदैव गृहस्थी का संचालन किया है । पश्चिम की जो चीजें अच्छी हैं, वह उनसे लीजिए । संस्कृति में सदैव आदान–प्रदान होता आया है; केवल अन्धी नकल तो मानसिक दुर्बलता का ही लक्षण है !

(ख) साहित्य बद्‌गुमानियों को मिटानेवाली चीज है । अगर आज हम हिन्दू और मुसलमान एक–दूसरे के साहित्य से ज्यादा परिचित हों, मुमकिन है हम अपने को एक–दूसरे से कहीं ज्यादा निकट पायें । साहित्य में हम हिन्दू नहीं हैं, मुसलमान नहीं हैं, ईसाई नहीं हैं, बल्कि मनुष्य हैं और वह मनुष्यता हमें और आपको आकर्षित करती है ।

अथवा

(ख) जिस समाज में रात–दिन मेहनत करनेवालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी ।